साहित्योत्सव
Festival of Letters
28 जनवरी - 2 फ़रवरी 2019
भाषाएँ अनेक • देश एक
दैनिक समाचार बुलेटिन
रविवार, 3 फ़रवरी 2019

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन : अभिव्यक्त की अपनी पीड़ा

सब हमारे तन को छूना चाहते हैं, मन को कोई नहीं

साहित्योत्सव के अंतर्गत 2 फ़रवरी 2019 को ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया। साहित्योत्सव के अंतर्गत दिल्ली में पहली बार इस तरह का सम्मिलन आयोजित हुआ, जिसका प्रबुद्ध साहित्य समाज में व्यापक स्वागत हुआ। सम्मिलन का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया, जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे काफ़ी लंबे समय से ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज देने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने ट्रांसजेंडर कवियों को मंच प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए स्मरणीय है और इससे हम सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे।

इस अवसर पर 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अपनी कविताएँ प्रस्तुत करनेवाली ट्रांसजेंडर कवयित्रियाँ थीं—रानी मजुमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता दे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ। बाङ्ला कविताओं के हिंदी अनुवाद पार्थसारथि भट्टाचार्जी द्वारा प्रस्तुत किए गए। ये ट्रांसजेंडर कवि पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से आए हुए थे। इनमें से कुछ प्रोफ़ेसर, अध्यापक, सिविल इंजीनियर आदि कार्यों से जुड़े हैं। सम्मिलन की अध्यक्षता देवज्योति भट्टाचार्जी द्वारा की गई। सभी ट्रांसजेंडर कवियों की कविताओं में एक ही मुख्य दर्द था और वो था अपनी पहचान को लेकर। सभी ने कहा वे पैदा तो मर्द के रूप में होते हैं, लेकिन उनका मन स्त्री का होता है। सभी के मन में उनके घरवालों द्वारा उनकी उपेक्षा करना तथा समाज द्वारा उन्हें स्वीकार ना करने का दर्द था। सभी ने कहा कि सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं। रेशमा जो बिहार से आई थीं, ने कहा कि अब जो थोड़ा-बहुत सम्मान उन्हें मिल रहा है, वह क़ानूनों की वजह से है, न कि समाज द्वारा दिया जा रहा है।

सम्मिलन के आरंभ में औपचारिक स्वागत तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन हम देश के अन्य भागों में भी करेंगे तथा ट्रांसजेंडर कवियों को अन्य कवियों के साथ मंच साझा करने के लिए भी आमंत्रित करेंगे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी

गाँधी कभी विस्मृत नहीं किए जा सकते : इंद्रनाथ चौधुरी

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'भारतीय साहित्य में गाँधी' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन आयोजित सप्तम सत्र 'भारतीय काव्य, नाटकों तथा प्रस्तुतियों में गाँधी' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता अनीसुर रहमान ने की। इस सत्र में के. एस. राजेंद्रन ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के गाँधी केंद्रित नाटकों को संदर्भित करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। रत्नोत्तमा सेनगुप्त ने फिल्मों में गाँधी विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अनीसुर रहमान ने जयंत महापात्र, के. सच्चिदानंदन और मीना कंदस्वामी की गाँधी केंद्रित कविताओं के उद्धरण देते हुए भारतीय कविता में गाँधी की उपस्थिति को रेखांकित किया।

संगोष्ठी का अष्टम सत्र सुकांत चौधुरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'गाँधी पर प्रभाव' विषय पर केंद्रित था। रामदास भटकल ने कहा कि गाँधी और गोखले का संबंध एक गुरु शिष्य का था और गोखले उनके राजनीतिक गुरु भी थे। प्रणव खुल्लर ने कहा कि लुई फिशर ने लिंकन की तरह गाँधी को कलात्मक मनुष्य के रूप में देखा और उनकी असाधारण जीवनी को सजीव किया। सुकांत चौधुरी ने अपने अध्यक्षीय व्यक्तव्य में गाँधी और टैगोर को असाधारण प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व कहते हुए उन्हें एक दूसरे का पूरक बताया।

संगोष्ठी के नवम सत्र की अध्यक्षता कमलकिशोर गोयनका ने की और गाँधी की पत्रकारिता पर विस्तार से अपने विचार रखते हुए कहा कि उन्होंने पत्रकारिता का भारतीय मॉडल पेश किया। भैरव लाल दास ने कुछेक उदाहरणों के माध्यम से लोक में गाँधी की उपस्थिति को रेखांकित किया। मधुकर उपाध्याय ने कहा कि बाङ्ला, मराठी, मलयाळम् और गुजराती को छोड़कर गाँधी केंद्रित बाल साहित्य दुर्लभ है। उन्होंने कहा कि गाँधी का व्यक्तित्व जादूगर जैसा है। बचपन में बापू को घुट्टी के रूप में पिलाना होगा।

संगोष्ठी का दशम एवं अंतिम सत्र इंद्रनाथ चौधुरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'गाँधी पर समकालीन साहित्यिक विमर्श' पर केंद्रित था। उन्होंने कहा कि गाँधी कभी भी विस्मृत नहीं किए जा सकते हैं। शाहिद जमाल ने अपने आलेख में कहा कि गाँधी मॉडल और सच्चे लोकतंत्र के द्वारा ही गिरते राजनीतिक स्तर को उठाया जा सकता है। वर्षा दास ने कहा कि 'गाँधी और सशक्तिकरण' दोनों गाँधी और स्वराज आंदोलन की तरह था। उन्होंने राजा और रंक सभी को बराबर माना। उनका सशक्तिकरण 'गाँधी युग' में तब्दील हो सकता है।

संगोष्ठी के अंत में जीवंत खुली चर्चा भी हुई जिसमें गिरिराज किशोर, प्रियदर्शिनी, सच्चिदानंद झा, भैरवलाल दास, रामनाथ भटकल आदि विद्वानों और सुधी श्रोताओं ने अपनी भागीदारी की। कार्यक्रम का संचालन और अंत में धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव (कोलकाता) देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

परिचर्चा : भारत में प्रकाशन की स्थिति

प्रकाशन में रोज़गार और राजस्व दोनों ही हैं : रमेश कुमार मित्तल

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'भारत में प्रकाशन की स्थिति' विषयक परिचर्चा का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि यह तीसरा अवसर है, जब हम साहित्योत्सव के दौरान पुस्तक प्रकाशन की स्थिति पर चर्चा के लिए उपस्थित हुए हैं, लेकिन इस कार्यक्रम में भारतीय प्रकाशकों की अरुचि निराश करती है। कार्यक्रम का बीज वक्तव्य ग्लोबल एकेडेमिक पब्लिशिंग, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के निदेशक सुगता घोष ने दिया। उन्होंने कहा कि पिछले तीन वर्षों से प्रकाशन उद्योग यथास्थिति में है, जबकि कुछ समय पहले तक यह घोषणा की जा रही थी कि डिजिटल पुस्तकों के आने से मुद्रित पुस्तकों का अंत हो जाएगा। तथाकथित लघु प्रकाशक भी पाठकों की रुचि के अनुसार किताबें छापकर यथासंभव लाभ उठा रहे हैं।

संवाद सत्र की अध्यक्षता करते हुए रमेश कुमार मित्तल ने कहा कि प्रकाशन रोजगार और राजस्व दोनों उपलब्ध कराता है। इस समय यह उद्योग बहुत ही विविधतापूर्ण और गतिशील है तथा इसमें केवल व्यावसायिक प्रकाशक ही नहीं, बल्कि संस्थान, विश्वविद्यालय और सरकारी प्रकाशनगृह भी सफल हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का प्रकाशन विश्व में छठे स्थान पर है, जबकि अंग्रेज़ी प्रकाशन दूसरे स्थान पर है।

अन्य वक्ताओं में अशोक माहेश्वरी, चालेंदु शर्मा दाधीच, भास्कर दत्ता बरुआ, रामकुमार मुखोपाध्याय शामिल थे। सभी का कहना था कि प्रकाशन की स्थिति क्षेत्रीय भाषाओं में ज़रूर चिंताजनक है, लेकिन उसे परस्पर अनुवादों की संख्या बढ़ाकर नियंत्रित किया जा सकता है। सभी ने क्षेत्रीय भाषाओं के स्तरीय साहित्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें केवल क्षेत्रीय कहकर प्रकाशित न किया जाना इन भाषाओं के समृद्ध साहित्य से पाठकों को वंचित करना है। श्री दाधीच ने कहा कि तकनीक से हमें डरने की ज़रूरत नहीं, बल्कि उसका लाभ उठाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन संपादक(हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ

कविता/कहानी प्रतियोगिता, कार्टून कार्यशाला एवं कहानी पाठ

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों के नाम रहा। 'आओ कहानी बुनें' शीर्षक के अंतर्गत बच्चों के लिए आज विभिन्न बाल गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने की कार्यशाला, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियाँ सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए।

बच्चों के लिए कहानी और कविता प्रतियोगिता जूनियर और सीनियर वर्गों में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए 300 से ज़्यादा बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कुछ दिव्यांग बच्चे भी शामिल थे। कार्यक्रम में डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, पाथवे स्कूल, भारतीय विद्या भवन, मॉडर्न स्कूल, इंडियन स्कूल, केंद्रीय विद्यालय,

राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सर्वोदय बाल विद्यालय और डीएवी के बच्चों ने भागीदारी की। कार्टून बनाने की कार्यशाला में प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर ने बच्चों को कार्टून बनाने की कला सिखलाई। प्रख्यात बाल साहित्यकार दिविक रमेश और रजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। ज़ेबुन्निसा 'हया' ने बाल कहानी सुनाई। बच्चों ने सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कुछ बच्चों ने गाँधी पर अपनी विचार व्यक्त किए और स्वरचित कविताएँ भी सुनाईं। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी की संपादक (अंग्रेजी) स्नेहा चौधुरी ने किया।

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in